JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

डॉ. पद्मा शर्मा की कहानियों में "स्त्री संघर्ष"

वर्षा देवी ठाकुर
डॉ. बहादुर सिंह परमार

हिन्दी अध्ययन शाला एवं शोध केन्द्र
महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय
छतरपुर, मध्यप्रदेश 471001

सारांषः– प्रसिद्व कथाकार डॉ. पद्मा शर्मा ने अपनी कहानियों में स्त्री मन की संवेदनषीलताए विडम्बनाओं और सम्बन्धों की दुरूहताओं को स्पष्ट किया है। स्त्री मन को विभिन्न दृष्टिकोंण से उकेरने के प्रयास में स्त्री की मनः स्थिति को गहराई से स्पर्ष किया है और जीवन की जटिलताओं को भी सहजता में देखा है।

स्त्री पर होने वाले अत्याचारए अनाचारए और शारीरिक शोषण के विरूद्ध अनेक आवाजें उठाईं गईं। इसके अतिरिक्त स्त्री की मानसिक वेदना पर प्रकाष डालना भी आवष्यक हैए क्योंकि कहा जाता है कि शरीर के घाव भर जाते हैंए लेकिन मन के घाव कभी नहीं भरते ।

आज की नारी षिक्षित एवं उच्च पदों पर आसीन है फिर भी कहीं न कहीं आज भी उसका शोषण हो रहा है। श्धर्म और परंपरा सामाजिक न्याय का गला घोंट देते हैंए और हर चीज अपने ही नजरिए से देखते हैं और दूसरों पर थोपते है। तर्क का धर्म में दखल नहीं है। आस्था और चमत्कार ही उनके हथियार हैंए और लोगों का अज्ञान उनकी जरवेज जमीनए जिस पर वे अंधविष्वास की खेती करते हैं। लिंग भेद को पाप पुण्य से जोडकर भ्रमित करते हैं। ऐंसी–ऐंसी परम्पराएं हमारे देष में मौजूद हैंए जो प्रत्यक्षदर्षी अन्याय का प्रतीक हैए फिर भी धर्म के नाम पर हम उन्हें गौरवान्वित करते हैं।श

स्त्री का संघर्ष दोयम दर्जे का है। उसके अन्दर का द्वन्द्व कभी समाप्त नही होता "स्त्री कितनी भी आजाद हो जाए स्त्री की उस स्वतन्त्रता को सह पाने और बर्दाष्त करने के लिए पुरूष मन का तैयार होना भी जरूरी है। स्त्री मुक्ति की मुहिम को पुरूष समर्थन की दरकार होती हैए चूँकि समानता के अधिकार को समाज स्वीकृत करेगाए तभी उस पर कार्यान्वयन संभव होगा और अभी यह समाज पुरूषों द्वारा ही संचालित है। पुरूष की, सत्ता और समाज पर जोरदार पकड़ है।

यह भी सच है कि स्त्री अभी गुलामी की स्थिति में है और पुरुष स्वामी की स्थिति में, इसलिए स्त्री को अपने बंधन से मुक्त होने के लिए ज्यादा संघर्ष करना होगा।"

डॉ. पद्मा शर्मा की कहानी 'आँचल के साये में' की नायिका स्मिता षिक्षित और कामकाजी होते हुए भी ससुराल में पति एवं परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा घुटन का षिकार होती है। वह मन ही मन सोचती रहती है कि "महिलाओं को एक महिला के हारने पर कितना आनन्द आ रहा है। पुरुष के ही पैरों तले दवी महिलाएँ पुरुष की ही जीत में प्रसन्न होती हैं। इनका क्या कसूर है? प्रारम्भ में इनको सिखाया भी तो यही गया है– पुरुष की जीत और औरत की हार फिर आँखे नया कैंसे देख सकती हैं?"

कहानी 'कस्तूरी मृग नाहिं' की नायिका लाजवन्ती जीवन संघर्षों में परेषान, अपनी संतान के सुख के लिए अनेक प्रकार के कष्ट सहती है और जब उसे कैंसर की बीमारी हो जाती है, तो उसके लड़के आपस में चंदा जोड़ने लगते हैं, यह सुनकर लाजवन्ती को अत्यन्त पीड़ा होती है, और वह सोचने लगतीं हैं कि "जिस स्तन ने उनकी भूख मिटाई है, आज

उसी के ऑपरेषन के लिए चन्दे हो रहे हैं, सार्वजनिक कामों के लिए चन्दे इकट्ठे किए जाते हैं। क्या आज माँ भी सार्वजनिक हो गई? वे मन ही मन याद करने लगीं कि किस लड़के को कितने बरस दूध पिलाया है यदि वे सही–सही बता दें तो रूपये देने वाले को भी आसानी हो जाएगी और उसी हिसाब से रूपये अदा करके दूध के कर्ज से मुक्ति पा लेगा।'' इस प्रकार समाज में स्त्री माँ के रूप में भी घुटन और पीड़ा की षिकार होती है।

कहानी 'अभिलाषा' की मुख्य नायिका अभिलाषा प्रेमिका से आत्महत्या तक के घटनाक्रम में कैंसी परिस्थितियों से गुजरती है, उसका यथार्थ चित्रण अत्यन्त पीड़ादायी एवं त्रासद है। अभिलाषा अनु से प्रेम करती थी, धीरे–धीरे दोनों आपस में घूमने, बातें करने एवं शादी के सपने बुनने लगे अभिलाषा जब भी शादी का प्रस्ताव अनु के सामने रखती वह टालता जाता अभिलाषा कि इतनी स्वच्छंदता देख उसके घर वालों ने अनु से मिलने पर अंकुष लगा दिया, तो अभिलाषा घर छोड़ के अनु के पास आ गई और शादी के लिए कहने लगी अनु ने शादी करने से मना कर दिया। अभिलाषा आत्महत्या करने गई तो वहां उसे लोकेष नामक व्यक्ति ने बचा लिया, उसने अपने पास रख के अभिलाषा की देखभाल की और धीरे–धीरे उसको बहला–फुसला के उसके साथ शारीरिक संबंध बना लिए और शादी करने के लिए हाँ बोलता रहा। जब अभिलाषा गर्भवती हो गई, तो उसने फिर से शादी का प्रस्ताव रखा, वह बोलने लगा मैं शादी नहीं कर सकता मेरी शादी हो चुकी है। यह धोखा अभिलाषा के दिल को तार–तार कर गया और कहने लगी ''इस दरिन्दे समाज में जीना नहीं चाहती'' चाकू मारते हुए ''अरे पापी आज तूने एक नहीं दो हत्याएँ की हैं। एक मेरी और दूसरी उस भावी षिषु की जो अपने सपने भी न बुन पाया था। अच्छा ही है सपने देखना खतरनाक है। अच्छा हुआ वह नवजात सपने नहीं वुन पाया। वह लड़का होता तो मेरे समान दूसरों से छल करता और लड़की होती तो तेरे जैसे हैवानो की दुनिया में वह किसी न किसी द्वारा छली जाती।''

इस प्रकार समाज में स्त्री को प्रेम और विष्वास करना गुनाह है।

डॉ. पद्मा शर्मा की कहानी 'कोख' कन्याभ्रूंण हत्या पर आधारित है। इसकी नायिका समता कन्याभ्रूण हत्या के विरूद्ध रहती हैं। वह गर्भधारण करती है, तो उसके घर–वाले पुत्र जन्म के अंधविष्वासी संकेतो को आजमाते रहते हैं। समता का जब अल्ट्रासाउण्ड करवाया जाता है, तो उसके गर्भ में पल रहा षिषु लड़की होती है घर वाले गर्भपात कराने के लिए कहते हैं तो समता आक्रोषित हो उठती है। कहती है कि ''मैं अपनी बेटी को जन्म दूँगी।'' उसके लिए मुझे कितने भी संघर्ष क्यों न करने पढें। आज विज्ञान तकनीकी के युग में कोई भी क्षेत्र बेटी से अछूता न होने पर भी पुत्र मोह वहीं का वहीं है क्योंकि.....''बोए जाते हैं बेटे, उग जाती हैं बेटियां ऊँचाइयों तक ठेले जाते हैं बेटे, पहाड़ों पर चढ़ जाती हैं बेटियाँ। माँ बाप को बांटते हैं बेटे, उन्हें सम्भालती हैं बेटियाँ। फिर भी न जाने क्यों हम चाहते हैं बेटे और गिराते हैं बेटियाँ।

''यह सच है कि स्त्री–विमर्ष ने स्त्री को वस्तु से व्यक्ति बनाया है। उसे मनुष्य होने का अहसास, बराबरी का बोध, मुक्त व स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने का अधिकार और अपनी देह की मालिक में खुद हूँ कहने का साहस दिया है, किंतु एक विचित्र सच्चाई यह भी है कि स्त्री–मुक्ति का अहसास होने के बावजूद विष्व भर की स्त्रियाँ पुरुषों द्वारा निर्धारित सौन्दर्य मानकों के खाँचो में खुद को फिट करने की होड़ में शामिल हैं। जिंदगी भर वे इसी के लिए प्रयासरत रहती हैं।''

''आज विज्ञापनों में स्त्री के अष्लील चित्र सौन्दर्य प्रसाधन में स्त्री के नंगे विज्ञापन निकलते हैं। चाहे उत्पाद मर्दों के लिए हों/स्त्री के लिए हो/या बच्चों के लिए/उनका होना जरूरी है। वे अपनी अदा/अपनी देह दिखाने का/सबको रिझाने का/ले रहीं मेहनताना कुलमिलाकर देह तक सीमित कर दिया गया है। उपनिवेषीकरण बाजार कुछ नहीं मानता। मीडिया से हर एक प्रक्षेपित किए जा रहे संदेष का मूल है कि देह ही सर्वोपरि है।''

'भय' कहानी की नायिका सुजाता बिना विवाह किये सारा जीवन अपने भाई माता–पिता के लिए बोझ न बने इसलिए स्वावलम्वी जीवन व्यतीत करती हैं। पढ़–लिखकर मेहनत कर माता–पिता की सेवा करती हैं। और माता–पिता के खत्म हो जाने के बाद भतीजे को अपने पास रख लेती है तो, बुआ की सम्पत्ति छीनने के लिए अठारह वर्षीय युवा की बलिष्ठ भुजाओं का दबाब उसकी साठ वर्षीय खाल छोड़ती हडिड्याँ कहाँ सहन कर पाती। चाणक्य ने लिखा है– ''भूखे शेर, कामांध व्यक्ति, भेड़–सी चलित भीड़ और नषे में धुत्त धूर्त का कोई विवके नहीं होता।'' उसने सुजाता पर आक्रामक तरीके से कागज पेन लेकर उसकी संपत्ति पर हस्ताक्षर कर दिए। व्यक्ति जब कठिन परिस्थितियों में स्वयं को अकेला महसूस करता है तब वह मानसिक रूप से भी असहज हो जाता है। इस प्रकार समाज में स्त्री जन्म से लेकर मृत्यु तक, शोषण, घुटन और अत्याचार की षिकार रहती है। उसका पूरा जीवन संघर्षों में गुजरता है।

कहानी 'मॉल' की नायिका संध्या जीवकोपार्जन के लिए मॉल में काम करती है अपने छोटे बच्चे को घर छोड़कर काम करने जाती संध्या मॉल में अनेक तरह के लोगों की अष्लील, अभद्रता पूर्ण वातावरण को सहती।

ग्राहक ने एक कोट उठाया तो उसने आदमकद शीषे की ओर इषारा करते हुए कहा ''इधर आइये.....'' ग्राहक कोट शरीर से लगाकर देखने लगा। वह अपने स्टॉल पर लौट आयी, तब मालिक ने इषारा करते हुए कहा वो ग्राहक की मदद करे। वह ग्राहक के पास जाकर बोली ''लाइए मैं मदद करती हूँ'' वह कोट पकड़कर खड़ी हो गयी .....ग्राहक ने बाहें डाली.....जब संध्या को सहयोग मिला तो ग्राहक ने कई कोट पहनकर देखे। यह सब सहन कर संध्या के मन में संघर्ष चलता रहा..... इन लोगों ने स्त्री का चेहरा, चाल और चरित्र तीनों बदल दिये। स्त्री की छवि को विकृत कर दिया है। क्या स्त्री का काम सिर्फ पुरुषों को आकर्षित करना है? क्या स्त्रियाँ सिर्फ मौंज–मस्ती का साधन है?
पितृसत्तात्मक समाज में पुरूषों की सोच कब बदलेगी? कब स्त्री को पुरूष मनुष्य समझेंगे ये अत्यन्त चिन्ता का विषय है? क्योंकि लम्बे अरसे से सोच में परिवर्तन नहीं आ पाया।

स्त्री अस्मिता को लेकर तस्लीमा नसरीन कहती हैं ''जिस दिन समाज स्त्री शरीर का नहीं उसकी मेधा और श्रम का मूल्य देना सीख जाएगा, सिर्फ उस दिन स्त्री मनुष्य के रूप में स्वीकृत होगी।'' स्त्री और पुरूष प्रकृति एवं मानव समाज के दो पहियों के समान है; तो असमानता क्यों?

मान लिया जाये प्रकृति हमें संघर्ष करना सिखाती है। मनुष्य संघर्ष शील प्राणी होता है, परंतु स्त्री जीवन में इसका आधिक्य क्यों? संतुलित समाज के लिए रूढ़िवादी परंपराओं में परिष्कार करना जरूरी है। जब तक स्त्री संबंधी संस्कृति परम्पराएँ, धर्म आदि परिष्कृत न होंगे, तब तक संतुलित समाज की कल्पना करना व्यर्थ है।

संदर्भ–सूचीः–

1. गुप्ता रमणिका, (स्त्रीमुक्ति संघर्ष और इतिहास) सामयिक प्रकाषन नई दिल्ली संस्करणः 2022 पृ.–118
2. गुप्ता रमणिका, (स्त्रीमुक्ति संघर्ष और इतिहास) सामयिक प्रकाषन नई दिल्ली संस्करणः 2022 पृ.–110
3. शर्मा डॉ. पद्मा, (रेत का घरौंदा, कहानी संग्रह), नवचेतन प्रकाषन दिल्ली 110059 संस्करण 2004 पृ.–31
4. शर्मा डॉ. पद्मा (रेत का घरौंदा, कहानी संग्रह) नवचेतन प्रकाषन दिल्ली 110059 संस्करण 2004 पृ.–15
5. शर्मा डॉ. पद्मा (रेत का घरौंदा, कहानी संग्रह) नवचेतन प्रकाषन दिल्ली 110059 संस्करण 2004 पृ.–93
6. दीक्षित सीमा (स्त्री अस्मिताः शय्या से सर्वोच्च अदालत तक)सामयिक बुक्स नई दिल्ली 110002 संस्करण 2011पेज 34
7. गुप्ता रमणिका (स्त्रीमुक्ति संघर्ष और इतिहास) सामयिक प्रकाषन नई दिल्ली संस्करणः 2022 पृ.–43
8. शर्मा डॉ. पद्मा (सौन्दर्यबोध एवं भारतीय चिन्तन परंपरा) आराधना ब्रदर्स कानपुर 208006 संस्करण2014 पृ.–94
9. शर्मा डॉ. पद्मा (इज्जत के रहबर) बोधि प्रकाषन जयपुर 302006 संस्करण 2022 पृ.–52
10.शर्मा डॉ. पद्मा (इज्जत के रहबर) बोधि प्रकाषन जयपुर 302006 संस्करण 2022 पृ.–40
11.दीक्षित सीमा (स्त्री अस्मिताः शय्या से सर्वोच्च अदालत तक) संस्करण 2011 पेज 16